RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

शरद सिंह के साहित्य में स्त्री जीवन परं चिन्तन

[1]सोनिका, [2]डा0 दर्शना

[1]शोधकर्त्ता, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर
[2]शोध निर्देशक, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
स्त्री जीवन, शरद सिंह

ABSTRACT

स्त्री जीवन का सूक्ष्म विश्लेषण इनके कथानकों की विशेषता है। इनकी कहानियों में उपस्थिति स्त्री विमर्श पूर्वाग्रह–मुक्त दस्तावेज़ी अन्वेषण के रुप में उभर कर सामने आता है और वैचारिक अर्थवत्ता के साथ–साथ साहित्यिक मानकों पर भी खरा उतरा है। इनकी कहानियों का नाटय मंचन भी किया गया है। शरद सिंह की कहानियों एवं उपन्यासों में नए कथ्य की खोज मिलती है। वह समाज में उपस्थित उन बिन्दुओं पर लिखना पसंद करती हैं जो प्रायः अछूते रह जाते हैं। मध्यप्रदेश में जन्मी शरद सिंह हिंदी के आधुनिक कथा साहित्य का सितारा है। उनके लेखन में जबरदस्त क्षमता है और अनछुए विषयों को उजागर करने की तड़प है।

प्रस्तावना

आधुनिक कथा साहित्य एवं उपन्यास के क्षेत्र में शरद सिंह की अपनी विशिष्ट पहचान है। इनकी कहानियाँ एवं उपन्यासों में सदा नवीन कथानक एवं शैली पढ़ने को मिलती है। स्त्री जीवन का सूक्ष्म विश्लेषण इनके कथानकों की एक विशेषता हैं।

'पिछले पन्ने की औरतें', 'पचकौड़ी' एवं 'कस्बाई सिमोन' बहुचर्चित उपन्यासय 'तीली–तीली आग', 'बाबा फरीद अब नहीं आते', 'छिपी हुई औरते और अन्य कहानियाँ', कहानी संग्रहय 'पत्तों में कैद औरतें', 'डॉ अम्बेडकर का स्त्री–विमर्श', स्त्री सशक्तिकरण पर आधारित 'औरत : तीन तस्वीरें', स्त्री–विमर्श, राष्ट्रवादी व्यक्तित्व श्रृंखला के अंतर्गत दीनदयाल उपाध्याय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं सरदार वल्लभ भाई पटेल सहित अब तक इनकी लगभग तीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। शरद सिंह के अभी तक तीन उपन्यास और पाँच कहानी संग्रह समेत 30 से अधिक किताबें छप चुकी हैं। उन्हें हिन्दी के कई प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाज़ा जा चुका है।''

साहित्य की समीक्षा

पिछले पन्ने की औरतें

शरद सिंह का यह पहला उपन्यास 'पिछले पन्ने की औरतें' बेड़िया समाज की औरतों पर केंद्रित होने के साथ ही उन सभी औरतों के त्रासद–जीवन की ओर संकेत करता है जो स्त्री–प्रगति की मुख्यधारा से परे हैं और इस पुरुष–प्रधान समाज में दैहिक, मानसिक और आर्थिक शोषण का शिकार रही है। इस उपन्यास के माध्यम से बेड़िया समाज की औरतों के जिस निर्वसन सत्य को पूरी ईमानदारी के साथ सामने रखा गया है, वह मन को झकझोर देती है।

पचकौड़ी

'पचकौड़ी' शरद सिंह जी का दूसरा उपन्यास है। अपने बहुचर्चित उपन्यास के लिए लब्धप्रतिष्ठित कथाकार शरद सिंह का यह उपन्यास कदम–कदम पर चौंकाता हुआ एक ऐसे यथार्थ से परिचित कराता है जो हृदय में जीवन को जीने की ललक ले कर जीने वाले शोषितों के संघर्ष की कथा है। यहाँ यह तथ्य मन को भीतर तक कुदेरता है कि दैहिक स्तर पर शोषित स्त्रियाँ तो है ही, पुरुष भी हैं। कमोबेश जो निर्बल हैं, लाचार हैं और जिनमें अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करने की उत्कट इच्छा है उसे किसी न किसी रुप में हर कदम पर शोषण का शिकार होना पड़ता है। यह उपन्यास एक ऐसे युवक के जीवन की परतें खोलता है जो उस समय यौन–शोषण का शिकार बना, जब उसे मालूम ही नहीं था कि जो कुछ उसके साथ घटित हुआ, वह क्या था?

स्त्री जीवन परं चिन्तन

आधुनिक युग व्यक्ति–स्वातंत्र्य का युग हैं। आज मानव दास्ता की बेड़ियों को तोड़कर एक नई स्वतन्त्र जीवन चेतना के साथ प्रगति के अछूते शिखरों को स्पर्श कर रहा हैं। आज प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति के अवसर पाने के लिए मचल रहा हैं। अपने व्यक्तित्व के चौमुखी विकास के लिए आज हर किसी को समान अधिकार प्राप्त हैं चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष हो। कानून की दृष्टि से भी स्त्री की स्थिति पुरुष के बराबर हैं परन्तु दैनंदिन जीवन में पितृसत्तात्मक संस्था, परिवार, धार्मिक संस्कारों एवम् परम्पराओं तथा अन्य सामाजिक मूल्यों का प्रभाव अभी बहुत व्यापक हैं और जीवन के हर क्षेत्र में पुरुष का ही प्रभुत्व हैं। ''पुरुष एवम् नारी में उपलब्धि, अभिवृत्ति, सहज रुचि, व्यवसायात्मक रुचि, मान्यता, व्यक्तित्व आदि सभी दृष्टिकोण में विभिन्नता हैं। स्वभाव सम्बन्धी सर्वेक्षणों के भी दो समूह बन गए हैं। जिनमें से अधिक धैर्य युक्त समूह नारी से सम्बन्धित माना जाता हैं और अधिकार प्रियता को पुरुष

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सम्बन्धी।'' आज औरतों की प्राथमिकताओं में बदलाव आया हैं। यह बदलाव साहित्यकारों के कार्य क्षेत्र एवं लेखन द्वारा देखा जा रहा हैं। नारी पराधीनता के प्रश्नों को लेकर साहित्यकारों के सामने बहुत सारे प्रश्न खड़े हैं। समाज को बदलने की प्रक्रिया में शरद सिंह ने भी औरत की अहं भूमिका को सामने रखा हैं। भारतीय समाज में सदियों से विसंगतियों के चलते पुरुष सत्ता की गुलामी का शिकार स्त्रियों की अंतहीन यातनाएँ जहाँ–तहाँ बिखरी पड़ी हैं। समाज में स्त्री का स्थान विशेष तो हैं लेकिन उसकी सामाजिक हैसियत 'वस्तु' से अधिक कुछ नहीं हैं। इसलिए शरद सिंह नारी की आज़ादी के लिए ऐसे सामंती सोच को बदलना निहायत जरुरी समझती हैं।

एक सच्चा साहित्यकार जनमन की थाह लेता हुआ समाज के प्रति अपने कर्तव्य, धर्म का निर्वाह साहित्य सर्जना के द्वारा करता हैं। वही साहित्यकार महान होता है जो अपने युग का प्रतिनिधित्व करता हैं। उसके लेखन में युग सत्य साकार हो उठता हैं।

उपसंहार

नया दृष्टिकोण एवं विचारधाराएँ जहाँ साहित्य को समृद्ध बनाती है वहीं कुछ घटनाएँ साहित्य में नया मोड़ लाती हैं। बदलते सामाजिक परिवेश और बदलती परवरिश में सामाजिक व्यवस्था तन्त्र से लोहा लेने वाले साहित्यकारों में डॉ. शरद सिंह यथार्थ का दस्तावेज हैं। अतः साहित्य युग चेतना का उद्‌बोधक और प्रेरक शक्ति का रूप है। अभिप्राय यह है कि कवि परिस्थिति को अपनी रचनाओं में प्रतिबिम्बित करता है। परन्तु इसके साथ यह भी उतना ही सत्य है कि वह अपनी समसामयिक परिस्थितियों की प्रतिक्रिया स्वरूप बहुत कुछ उन्हें परिष्कृत करने और बनाने का कार्य भी कारता है। वह कवि नहीं जो अपनी स्थिति से जन्म और जीवन ग्रहण करके अपने भावों और विचारों के द्वारा वायुमंडल को सुरभित विकसित व प्रफुल्लिा न कर दे। एक और वह युग का प्रतिनिधित्व करता है तो दूसरी ओर वह युग का निर्माण भी करता है, यही सभी महान कलाकारों के संबंध में सत्य हैं।

संदर्भ

- सामाजिक उपन्यास और नारी मनोविज्ञान, डॉ. शंकर प्रसाद, पृष्ठ संख्या–48
- पिछले पन्ने की औरतें, डॉ. शरद सिंह, पृष्ठ संख्या–61
- समय के साखी, ;अगस्त–2010द्ध, सं0आरती, पृष्ठ संख्या–24
- औरत तीन तस्वीरें, डॉ. शरद सिंह, पृष्ठ संख्या–238
- तीली–तीली आग, डॉ. शरद सिंह, पृष्ठ संख्या–18
- सरला दुआ–आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी–पृष्ठ संख्या–188

RRIJM 2015, All Rights Reserved